पर्यावरण और पृथ्वी संरक्षण को लेकर अग्रवाल महाविद्यालय, बल्लबगढ़ के पर्यावरण क्लब के तत्वावधान में 'पृथ्वी दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर पृथ्वी संरक्षण को लेकर स्लोगन प्रतियोगिता और निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में रेड यूथ क्रॉस, एनo एसo एसo और पर्यावरण क्लब के कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पर्यावरण क्लब की संयोजिका श्रीमती किरण आनंद ने प्राचार्य डॉo कृष्णकांत गुप्ता को पौधा भेंट कर स्वागत किया। एनo एसo एसo संयोजिका डॉo रेखा सेन ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर श्रीमती किरण आनंद ने पृथ्वी को बचाने के लिए सभी विद्यार्थियों को शपथ दिलवाई। उन्होंने कहा कि अगर हर व्यक्ति अपने जहन में इस बात को ठान ले कि वह बिजली, पानी, ऊर्जा के क्षेत्र में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाएगा तो निश्चय ही पृथ्वी दिवस को मानाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्राचार्य डॉo कृष्णकांत गुप्ता ने सभी विद्यार्थियों को पृथ्वी दिवस मानाने की बधाई दी। उन्होंने अपने उदबोधन में कहा अगर व्यक्ति अब भी पृथ्वी और पर्यावरण के प्रति जागरूक नहीं होगा तो आप यह मान लें 'इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा'। उन्होंने कहा आज विसंगति, अशांति का मूल कारण है कि व्यक्ति विशेष मंगल में जीवन ढूंढता है जबकि शांति और सुख के लिए जीवन में मंगल ढूँढना चाहिए।

उन्होंने कहा विवाह के दौरान वर वधू को सात वचनों के साथ भ्रूण हत्या पर रोक और पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी लेनी चाहिए अगर यह संभव हो गया तो निश्चय ही यह उक्ति 'स्वर्गादपि वसुंधरा' भारत वर्ष के सिद्ध जाएगी।

इस अवसर पर पर्यावरणविद डॉ० लवकेश ने पी० पी० टी० के माध्यम से पृथ्वी दिवस को क्यों, कैसे और किस प्रकार से मनाना चाहिए अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा अपनी असीमित महत्वकांक्षाओं के चलते आधुनिकवादी युग में पृथ्वी और उसके संसाधनों का व्यवस्थित और मर्यादित रूप से करना चाहिए ताकि पृथ्वी प्रकृति और मानव में उचित संतुलन बना रहे।

इस अवसर पर आयोजित नारा लेखन प्रतियोगिता में पंकज मंगला (बी० कॉम) ने प्रथम स्थान, शिवम (बी० कॉम ऑनर्स) ने द्वितीय तथा निकिता कौशिक (एम० एस० सी० सी० एस०) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा निबंध लेखन में भी पंकज मंगला ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। निर्णायक की भूमिका में डॉ० रेनू माहेश्वरी, श्रीमती कमल टंडन, डॉ० जयपाल सिंह थे। इस अवसर पर मंच सञ्चालन डॉ० बांके बिहारी ने किया।